भागवतांतर्गत शुकदेव जी की स्तुति

ŚB 1.2.2

सूत उवाच

यं(म्) प्रव्रजन्तमनुपेतमपेतकृत्यं(न्),

द्वैपायनो विरहकातर आजुहाव ।

पुत्रेति तन्मयतया तरवोऽभिनेदुस् -

तं(म्) सर्वभूतहृदयं(म्) मुनिमानतोऽस्मि ॥

सूतजी ने कहा, जिस समय श्री शुकदेव जी का यज्ञोपवीत संस्कार भी नहीं हुआ था, उन्हें अकेले ही संन्यास लेने के उद्देश्य से जाते देखकर उनके पिता व्यास जी विरह से कातर होकर पुकारने लगे , "बेटा, बेटा", उस समय तन्मय होने के कारण शुकदेव जी की ओर से वृक्षों ने उत्तर दिया । ऐसे सबके हृदय में विराजमान श्री शुकदेव मुनि को मैं नमस्कार करता हूं।

ŚB 1.2.3

य:(स्) स्वानुभावमखिलश्रुतिसारमेक-

मध्यात्मदीपमतितितीर्षतां(न्) तमोऽन्धम् ।

संसारिणां(ङ्) करुणयाह पुराणगुह्यं(न्),

तं(वँ) व्याससूनुमुपयामि गुरुं(म्) मुनीनाम् ॥

यह श्रीमद् भागवत अत्यंत गोपनीय रहस्यात्मक पुराण है। यह भगवत् स्वरूप का अनुभव कराने वाला और समस्त वेदों का सार है । संसार में फंसे हुए जो लोग इस घोर अज्ञानांधकार से पार जाना चाहते हैं, उनके लिए आध्यात्मिक तत्वों को प्रकाशित करने वाला यह एक अद्वितीय दीपक है । वास्तव में उन्हीं पर करुणा करके बड़े-बड़े मुनियों के आचार्य श्री शुकदेव जी ने इसका वर्णन किया है , मैं उनकी शरण ग्रहण करता हूं।

ŚB 1.19.34

सान्निध्यात्ते महायोगिन्- पातकानि महान्त्यपि ।

सद्यो नश्यन्ति वै पुंसां(वँ), विष्णोरिव सुरेतरा: ॥

हे महायोगिन्! जैसे भगवान विष्णु के सामने दैत्य लोग नहीं ठहरते, वैसे ही आपके सन्निधि से बड़े-बड़े पाप भी तुरंत नष्ट हो जाते हैं।

ŚB 12.12.69

स्वसुखनिभृतचेतास्तद्व्युदस्तान्यभावो-

ऽप्यजितरुचिरलीलाकृष्टसारस्तदीयम् ।

व्यतनुत कृपया यस्तत्त्वदीपं(म्) पुराणं(न्),

तमखिलवृजिनघ्नं(वँ) व्याससूनुं(न्) नतोऽस्मि ॥

श्री शुकदेव जी महाराज अपने आत्मानंद में ही निमग्न थे । इस अखंड अद्वैत स्थिति से उनकी भेद दृष्टि सर्वथा निवृत्त हो चुकी थी । फिर भी मुरली मनोहर, श्याम सुंदर की मधुमयी, मंगलमयी , मनोहारिणी लीलाओं ने उनकी वृत्तियों को अपनी ओर आकर्षित कर लिया और उन्होंने जगत के प्राणियों पर कृपा करके भगवत्तत्व को प्रकाशित करने वाले इस महापुराण का विस्तार किया । मैं उन्हीं सर्वपापहारी व्यासनंदन भगवान श्रीशुकदेव जी के चरणों में नमस्कार करता हूं।

ŚB 12.13.21

योगीन्द्राय नमस्तस्मै, शुकाय ब्रह्मरूपिणे ।

संसारसर्पदष्टं(यँ) यो, विष्णुरातममूमुचत् ॥

उन योगीराज ब्रह्म स्वरूप श्री शुकदेव जी को नमस्कार करते हैं जिन्होंने श्रीमद् भागवत महापुराण सुनाकर संसार - सर्प से डसे हुए राजर्षि परीक्षित को मुक्त किया।